प्यारे नबी ﷺ ऐसे थे!

माइल ख़ैराबादी

अनुवादिका

नाहीद अख़्तर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
अल्लाह रहमान रहीम के नाम से

प्यारे नबी ऐसे थे!

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न ज़्यादा लम्बे थे और न छोटे क़द के, न ज़्यादा दुबले थे और न मोटे। आपका सिर बड़ा था, माथा ऊंचा, नाक लम्बाई लिए हुए, भवें घनी, पलकें लम्बी, आंखें बड़ी-बड़ी और काली दाढ़ी भरी हुई, गर्दन ऊंची और चेहरा खड़ा-खड़ा था। आपके चेहरे पर ज़्यादा गोश्त न था। आपके बाल कंधों तक लम्बे रहते थे, जो न ज़्यादा छल्लेदार थे और न बिलकुल सीधे। आख़िर उम्र तक बाल बिलकुल काले रहे। आप उनमें अक्सर तेल डालते, कंघी करते और मांग निकालते थे।

आपके दोनों कंधों के बीचोंबीच कबूतर के अंडे के बराबर उभरा हुआ लाल गोश्त था, जिस पर तिल और बाल थे। दोनों कंधे गोश्त से भरे हुये थे और कंधो की हड्डियां बड़ी थीं। हथेलियां चौड़ी और नर्म, कलाइयां लम्बी और नाज़ुक, पांव की एड़ियां हलकी थीं। पांव के तलवे बीच से ज़रा-ज़रा ख़ाली थे। तलवों के बीच से पानी निकल जाया करता था। हुज़ूर सल्ल० के मुबारक़ जिस्म की खाल बड़ी नर्म और मुलायम थी।

रूप-रंग गोरा चिट्टा, लाली की झलक लिये हुये था। आप बड़े ही ख़ूबसूरत थे। जो देखता उसके दिल में आपकी मुहब्बत पैदा हो जाती। आपका पसीना मोती की तरह झलकता और उसमें बड़ी अच्छी ख़ुशबू आती।

हुज़ूर सल्ल० बड़ी तेज़ चाल चलते थे। चलते वक़्त ऐसा मालूम

होता कि जैसे आप ढलवां ज़मीन से उतर रहे हों।

आपका लिबास

प्यारे रसूल सल्ल० आम तौर पर तहबन्द और कुर्ता पहनते थे। ऊपर से धारीदार लम्बी चादर ओढ़ लेते, आप काला साफ़ा बांधते और साफ़े का कुछ हिस्सा दोनों कन्धों के बीच लटका लेते और कभी गले में लपेट लिया करते। साफ़े के नीचे टोपी ज़रूर हुआ करती थी जो सिर से चिपकी रहती थी। प्यारे नबी सल्ल० सफ़ेद लिबास ज़्यादा पसन्द करते थे।

हुज़ूर सल्ल० ने एक बार पाजामा भी ख़रीदा था, लेकिन उसे पहना नहीं, हां यह ज़रूर फ़रमाया कि यह अच्छा पहनावा है। मोज़े पहनने की आदत न थी। एक बार हब्श के बादशाह नजाशी ने तोहफ़े में काले चमड़े के मोज़े भेजे, हुज़ूर सल्ल० ने उन्हें पहना था। आप पांव में ऐसी चप्पल पहनते जैसे आजकल की हवाई चप्पल होती है। यानी चमड़े के तले और उनमें तसमें लगे होते थे।

प्यारे नबी सल्ल० बान की बुनी हुई चारपाई पर सोते, बानों से आपके प्यारे जिस्म पर निशान पड़ जाते। आप के पास चमड़े का गद्दा भी था, जिसमें खजूर के पत्ते भरे थे। एक कम्बल भी था जिसमें कई पेवन्द लगे हुये थे।

कभी-कभी तोहफ़े में बड़े क़ीमती कपड़े आये जो आपने पहने भी। लाल रंग का लिबास आपको पसन्द न था।

हुज़ूर सल्ल० का खाना-पीना

प्यारे नबी सल्ल० दूसरों की भूख का बड़ा ख़्याल रखते थे। आप के पास जो कुछ आता, ज़्यादातर दूसरों में बांट दिया करते। उम्र भर

अच्छा खाना आपको न मिला, यहां तक कि चपाती भी आपके खाने में न होती थी।

खाने की कुछ चीज़ें हुज़ूर सल्ल० को बहुत पसन्द थीं। सिरका, शहद, हलुवा, ज़ैतून का तेल, लौकी और हीस आप बड़े शौक़ से खाते थे। हीस अरब का एक खाना था जिसे घी में खजूर और पनीर डालकर पकाते और हीस तैयार हो जाता था। गोश्त ज़्यादा पसन्द फ़रमाते थे। गोश्त में लोकी की तरकारी पड़ी होती तो ख़ुश होते और लौकी के टुकड़े बड़े शौक़ से खाते।

हुज़ूर सल्ल० के घर में जौ का आटा हांडी में पकने के लिये चढ़ा दिया जाता, उसमें ज़ैतून का तेल, ज़ीरा और काली मिर्चें डाल दी जातीं। यह सब पक जाता तो यह खाना भी बड़े शौक़ से खाते।

पतली-पतली ककड़ियां भी बहुत पसन्द थी। तरबूज़ को खजूरों के साथ खाते, सत्तू भी पीते, दूध कभी ख़ालिस और कभी पानी मिलाकर पीते। कभी ऐसा होता कि आपके लिये किशमिश, खजूर और अंगूर पानी में भिगो दिया जाता, कुछ देर के बाद वह पानी पी लेते।

खाने के बरतनों में लकड़ी का एक प्याला था। वह टूट गया तो उसे लोहे के तारों से बांध लिया गया था। आप उसी प्याले में खाया करते थे। दस्तरख़्वान पर जो खाना आता उसमें से आपको जो पसन्द आता खाते, लेकिन किसी खाने को बुरा न कहते। खाने में इधर-उधर हाथ न डालते। अपने सामने से खाते, दूसरों को भी इसी तरह खाने की नसीहत फ़रमाते। हुज़ूर सल्ल० टेक लगाकर खाना कतई ना-पसन्द करते और जिसे इस तरह खाते देखते मना फ़रमाते थे।

आप तीन उंगलियों से खाते। खाने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ लेते। आख़िर में अल्लाह का शुक्र अदा करते। मेज़ पर आपने कभी खाना नहीं खाया। प्यास लगती तो ठंडा पानी पीते, ठंडा पानी पीकर बहुत ख़ुश होते। पानी तीन सांसों में पीते, खाना खाते और पानी पीते वक़्त

हंसना और बातें करना आपको अच्छा न लगता।

सफ़ाई और सुथराई

प्यारे नबी सल्ल० हमेशा पाक-साफ़ रहते। साफ़-सुथरा रहने के लिये दूसरों से भी कहते। किसी को गन्दा देखते तो उसे सफ़ाई के साथ रहने की नसीहत फ़रमाते। जो लोग साफ़ सुथरे रहते उससे ख़ुश होते और उसकी तारीफ़ करते।

एक बार प्यारे रसूल सल्ल० ने मस्जिद की दीवार पर थूक का धब्बा देखा, आपको बहुत बुरा लगा। यह देखकर एक अन्सारी औरत दौड़ी आई। उसने वह धब्बा मिटा दिया और उस जगह ख़ुशबू छिड़क दी। आप बहुत ख़ुश हुये और उसकी तारीफ़ की।

एक बार बाहर के कुछ लोग आप से मिलने आये। उनके सरदार ने मदीने के बाहर पड़ाव डाला। सब वहीं उतरे, सामान रखा और झट प्यारे नबी की मुहब्बत में शहर की तरफ़ दौड़े, ताकि हुज़ूर से मिलें। यह भी न देखा कि रास्ते का गर्दोगुबार बदन पर जमा है और ख़ुद पसीने में लतपत हैं।

अच्छा यह सब तो दौड़ पड़े, लेकिन उनके सरदार ने पड़ाव पर पहुंच कर पहले नहाया धोया, कपड़े बदले, हाथ में लाठी ली और बड़े अदब और क़ायदे से हुज़ूर के पास आया। सलाम किया। हूज़ूर ने इस सरदार के बारे में कहा, "यह जब मुसलमान नहीं हुये थे, उस वक़्त भी बड़े अच्छे आदमी थे और अब जबकि मुसलमान हैं तो भी बड़े अच्छे हैं।"

एक बार एक आदमी ख़राब कपड़े पहने हुये आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने उससे पूछा, "तेरे पास कुछ और है?" उसने जवाब दिया "अल्लाह का दिया बहुत कुछ है।" फ़रमाया, " फिर अल्लाह का शुक्र क्यों अदा नहीं करता?" यानी जब ख़ुदा ने दिया

है तो साफ़ सुथरे कपड़े पहनाकर।

एक आदमी के बाल बिखरे देखे तो प्यारे नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि इससे इतना भी नहीं होता कि उन्हें ठीक कर लिया करे।

एक दिन मस्जिद में, दीवारों पर जगह-जगह थूक के धब्बे देखे। आपके हाथ में खजूर की टहनी थी। उससे खुरच-खुरचकर धब्बे मिटा दिये फिर फ़रमाया, "क्या तुम लोगों को यह अच्छा लगेगा कि कोई तुम्हारे सामने आकर तुम्हारे मुंह पर थूक दे। देखो, जब कोई नमाज़ पढ़ता है तो ख़ुदा उसके सामने और फ़रिश्ते उसके दायें-बायें होते हैं। इसलिये सामने या दायें-बायें थूकना नहीं चाहिये।

सुबह से शाम तक

प्यारे नबी सल्ल० का रोज़ का तरीक़ा था कि फ़ज्र की नमाज़ पढ़ कर जानमाज़ पर ही पालती मारकर बैठ जाते। आप के प्यारे साथी (सहाबा) भी आकर आप के पास बैठ जाते। आप उनको अच्छी-अच्छी नसीहतें करते।

कभी हुज़ूर, सहाबा से पूछते, 'किसी ने कोई ख़्वाब देखा हो तो बयान करे।' सहाबा रज़ि० ख़्वाब बयान करते। आप ख़्वाब की ताबीर (मतलब) बताते। इसके बाद इधर-उधर की बातें होती रहतीं। लोग तरह-तरह के क़िस्से कहते, शेअ्र पढ़ते, हंसी-ख़ुशी की बातें करते। हुज़ूर सुनकर ख़ुश होते और मुस्कराते भी।

जब दिन कुछ चढ़ जाता तो चाश्त की नमाज़ पढ़ते, कभी चार रकअत कभी आठ रकअत। फिर घर जाते और घर के कामों में लग जाते। फटे कपड़ों को सिलते, जूता टूट जाता तो अपने हाथों से गांठ लेते। दूध दोहते और इसी तरह ज़ुहर के वक़्त तक कामों में लगे रहते।

अस्र की नमाज़ पढ़कर अपनी प्यारी बीवियों के घरों में जाते। सब की ख़ैरियत पूछते। थोड़ी-थोड़ी देर वहां ठहरते। आख़िर में एक बीवी

के यहां ठहर जाते। प्यारी बीवियां उसी घर में आकर जमा हो जातीं और मग़रिब से इशा तक वहीं रहतीं। हंसी-ख़ुशी की बातें करतीं। इशा की अज़ान होती तो कितनी ही ज़रूरी बात हो रही होती, हुज़ूर सल्ल० अधूरी छोड़कर उठ खड़े होते। मस्जिद जाते, नमाज़ पढ़ते और आकर सो जाते। प्यारी बीवियां चली जातीं। हुज़ूर को इशा की नमाज़ के बाद बात-चीत पसन्द न थी।

शाम से सुबह तक

प्यारे नबी सल्ल० इशा की नमाज़ पढ़कर सो जाते। सोते वक़्त क़ुरआन की कोई न कोई सूरत ज़रूर पढ़ते। सोने से पहले यह दुआ पढ़ा करते–

"ऐ अल्लाह मैं तेरा नाम लेकर मरता हूं, और ज़िन्दा होता हूं।"

सोकर जागते तो पढ़ते–

"उस ख़ुदा का शुक्र है, जिसने मौत के बाद ज़िन्दा किया और उसी की तरफ़ पलटना है।"

आधी रात के बाद कुछ रात बाक़ी रहती तो जाग उठते। मिसवाक सिरहाने रहती थी। उठकर मिसवाक (दातून) करते, फिर वुज़ू फ़रमाते और घर में ही नमाज़ पढ़ने लगते।

प्यारे नबी सल्ल० सीधी करवट सोते थे। सीधा हाथ गाल के नीचे रख लेते। सफ़र में होते और रास्ते में सोते तो सीधा हाथ ऊंचा कर लेते, चेहरा उसपर टेक लेते और गहरी नींद सो जाते।

सोते वक़्त कभी बिस्तर होता, कभी न होता। बिस्तर खाल का होता तो उसपर सो जाते या कभी चटाई होती तो उसपर आराम फ़रमाते और अगर कुछ न होता तो ख़ाली ज़मीन पर लेट जाते और आपको गहरी नींद आ जाती।

तहज्जुद की नमाज़ आप ज़रूर पढ़ते, यह नमाज़ आप पर फ़र्ज़ थी।

बातचीत

प्यारे नबी सल्ल० बहुत साफ़ और स्पष्ट शब्द बोलते थे। सुनने वाले आप की बात अच्छी तरह समझ लेते। आप किसी की बात के बीच में न बोलते। और न किसी को बोलने देते। जो बात अच्छी न लगती उसे टाल जाते या प्यार से समझा देते और बड़े ही मीठे शब्दों में उसे बात करने का तरीक़ा बता देते। आप हर एक की बात ध्यान से सुनते। फ़रमाया करते कि जिस को कोई ज़रूरत हो, वह मुझ से ज़रूर कहे। जो लोग पास न आ सकें, तो दूसरे लोग उनकी ख़ैरियत बतायें।

आप का हुक्म था कि जिस तरह बादशाहों के सामने अदब से खड़ा हुआ जाता है, उस तरह मेरे सामने खड़े न हों। यह भी फ़रमाया करते कि जो लोग अपने सामने लोगों को इस तरह खड़ा देखें और इस बात को पसन्द करें तो ऐसे लोग अपनी जगह जहन्नम में ढूंढें।

ऐसा भी होता कि प्यारे रसूल सल्ल० अपने प्यारों को देखते, तो मुहब्बत की वजह से उठ खड़े होते। उनकी पेशानी चूमते। दायी हलीमा आतीं तो आप उठकर उनके लिये चादर बिछाते। उनके बेटे (यानी आप के दूध शरीक भाई) आते तो मुहब्बत के मारे उठ खड़े होते और उनको सामने बिठाते। प्यारी बेटी हज़रत फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ि० आतीं तो उठकर उनकी पेशानी चूमते। प्यारे सहाबा को समझा दिया था कि किसी की शिकायत मेरे सामने न करें। मैं चाहता हूं कि हर एक से साफ़ दिल होकर दुनिया से जाऊं। बातचीत करते वक़्त इस्लामी तरीक़े और तहज़ीब का बड़ा ख़्याल रखते और इसके लिए दूसरों को भी ताकीद फ़रमाते। इस सिलसिले में अमीर-ग़रीब सबको टोकते।

एक बार आपके सामने एक अमीर आदमी को छींक आई। उन्होंने "अल्हमदुलिल्लाह" (अल्लाह का शुक्र) नहीं कहा, फिर एक ग़रीब आदमी को छींक आई तो उसने कहा, "अल्हम्दुलिल्लाह" आपने उसके जवाब में "यरहमुकल्लाह" फ़रमाया (यानी तुझ पर ख़ुदा की रहमत

हो) अब उस अमीर साहब ने शिकायत की कि हुज़ूर ने मेरे लिये रहमत की दुआ नहीं की। आपने उसे जवाब दिया कि तुम ने ख़ुदा को भुला दिया, मैंने तुमको भुला दिया। उन्होंने ख़ुदा को याद किया, तो मैंने उन्हें दुआ दी।

प्यारे रसूल (सल्ल०) और बद्दू

अरब में बद्दू वे लोग कहलाते हैं जो गांव में रहते हैं। वे बड़े ऊजड़ होते हैं। प्यारे रसूल सल्ल० के पास बद्दू भी आया करते। वह आप से बड़े ऊजड़पन से बातें करते, लेकिन हुज़ूर उन्हें बड़ी नर्मी से जवाब देते, बुरा न मानते। बद्दू आकर बड़ा बेतुका सवाल करते कहते, 'ऐ अल्लाह के रसूल! बताओ मेरे बाप का क्या नाम है? ऐ मुहम्मद! मेरा ऊंट खो गया है, बताओ कहां है?' ऐसे सवाल सुनकर आपको बुरा तो लगता, लेकिन आप ग़ुस्सा न करते, चुप रहते। लेकिन प्यारे सहाबा समझ जाते कि हुज़ूर को ग़ुस्सा आ गया, वे दिल ही दिल में कांपने लगते।

एक बार एक बद्दू ने आकर इसी तरह बेतुके सवाल किये। आपको बुरा लगा, लेकिन कहा, 'अच्छा पूछो जो पूछना है। मैं हर तरह के सवालों का जवाब दूंगा।' यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० घबरा गये। वे प्यारे रसूल सल्ल० की पसन्द की बातें करने लगे। असल में सहाबा रज़ि० को यह डर था कि बद्दुओं के जवाब में हुज़ूर कोई ऐसी बात न कह दें जो सारे मुसलमानों पर फ़र्ज़ हो जाये और जिसे मुसलमान अदा करने में परेशान हों और न कर सकें तो गुनाहगार हों।

प्यारे नबी (सल्ल०) का प्यारा मज़ाक़

लोग हंसी मज़ाक़ करते हैं तो बेतुकी और बेमतलब की बातें भी

कर जाते हैं और हंसी-हंसी में अदब-तहज़ीब का ख़याल नहीं रखते। लेकिन प्यारे नबी सल्ल० का मज़ाक़ भी बड़ा प्यारा होता था, आप बेमतलब न हंसते और न बेतुका मज़ाक़ करते। आप का मज़ाक़ लोग सुनते तो उन्हें मज़ा भी आता और उससे नसीहत भी हासिल करते।

औरतें अदब सिखाने के लिये अपने बच्चों को आपकी ख़िदमत में दे दिया करतीं। इन बच्चों में एक बच्चे थे हज़रत अनस रज़ि०। हज़रत अनस बड़े फ़रमाबरदार थे। हुज़ूर की हर बात ध्यान से सुनते और झट दौड़कर काम करते। हुज़ूर सल्ल० उनसे बहुत ख़ुश थे। एक बार हुज़ूर सल्ल० ने उनको आवाज़ दी, "ओ दो कान वाले!" लोगों ने सुना तो उन्हें बड़ा मज़ा आया। मज़ा यह कि दो कान तो सबके होते ही हैं। लेकिन हुज़ूर सल्ल० का यह मतलब था कि ऐ फ़रमांबरदार लड़के या ऐ कान लगाकर सुनने वाले बच्चे।

एक बार एक बूढ़ी औरत आई। उनके लिये हुज़ूर ने जन्नती होने की ख़ुशख़बरी दी थी। उन्होंने यह ख़ुशख़बरी एक दूसरे आदमी की ज़ुबान से सुनी, तो वह ख़ुश-ख़ुश दौड़ी आई कि हुज़ूर सल्ल० से पूछें और हुज़ूर की ज़बान से यह ख़ुशख़बरी सुन लें। अच्छा तो उन्होंने आकर पूछा "ऐ अल्लाह के रसूल! क्या मैं जन्नत में जाऊंगी?" आप मुस्कराये और फ़रमाया कि जन्नत में बूढ़ियों का क्या काम?

वह बूढ़ी औरत बड़ी भोली और सीधी-साधी थी। हुज़ूर से यह सुना तो लगी रोने-पीटने। यह देखकर सहाबा को बड़ा मज़ा आया। फिर उस बूढ़ी औरत को सबने समझाया कि जन्नत में बूढ़े लोग भी जवान होकर जायेंगे। अब वह समझी और ख़ुशी के मारे हंसने लगी। यह थीं हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि० हुज़ूर की "खिलाई" मां।

एक बार हज़रत उम्मे ऐमन रज़ि० ने आप से ऊंट मांगा। आपने जवाब दिया, "मैं तुमको ऊंट का बच्चा दूंगा।" उन्होंने कहा "मैं ऊंट लूंगी, बच्चा लेकर क्या करूंगी?" तब आपने कहा, "हर ऊंट तो

ऊंटनी ही का बच्चा होता है।" यह सुनकर वह मुस्करा दीं और ख़ुश हो गईं।

आप हंस पड़े

एक बार प्यारे नबी सल्ल० के एक प्यारे साथी घबराये हुये आपके पास आये। आपने हाल पूछा तो बोले, "मुझ से बड़ा गुनाह हो गया है, क्या करूं?" आपने बताया, "जाओ एक ग़ुलाम आज़ाद कर दो।" उन्होंने कहा, "हुज़ूर मैं तो ग़रीब आदमी हूं। ग़ुलाम कहां से लाऊं?" फ़रमाया, "अच्छा जाओ दो महीने के रोज़े रखो।" जवाब दिया "हुज़ूर मैं बहुत कमज़ोर आदमी हूं, रोज़े न रख सकूंगा।" आपने फ़रमाया, "अच्छा जाओ साठ ग़रीबों को खाना खिला दो।" फिर अर्ज़ किया, "हुज़ूर मेरे पास तो कुछ भी नहीं है।" इतने में थैला भरकर खजूरें कहीं से आ गईं। आपने उनको दीं, और फ़रमाया, "जाओ ग़रीबों को बांट दो।" अब उन्होंने फिर कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल! मदीने भर में मुझ से ज़्यादा कोई ग़रीब आदमी नहीं।" आप हंस पड़े और फ़रमाया, "जाओ तुम ख़ुद ही खा लो।"

ख़ुदा पर भरोसा

प्यारे नबी सल्ल० को ख़ुदा पर पूरा भरोसा था। बड़ी से बड़ी मुसीबत का सामना होता, कैसा ही खटका और डर होता आप ख़ुदा पर भरोसा रखते। आप जानते थे कि अगर अल्लाह का हुक्म न होगा तो कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

एक बार मक्के के काफ़िरों ने तय किया कि मुहम्मद सल्ल० को (तौबा-तौबा) क़त्ल कर दें। रात के वक़्त सबने आकर आप का घर घेर लिया, लेकिन उसी रात को सबके बीच होकर आप घर से निकल

गये और कोई जान भी न सका। बात यह हुई थी कि घर से निकलते वक़्त आपने अल्लाह से दुआ की तो अल्लाह के हुक्म से थोड़ी देर के लिये काफ़िर ऊंघ गये।

घर से निकल कर हुज़ूर सल्ल० अपने प्यारे साथी हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० के घर गये। उनको साथ लिया और शहर से बाहर जाकर ग़ारे सौर में छिप गये। सुबह को काफ़िरों ने जाना कि आप निकल गये। अब वे सब आपकी खोज में निकले। कुछ काफ़िर आपकी तलाश करते-करते ग़ारे सौर के मुंह पर जा खड़े हुये। अन्दर से हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उनके पैर देख लिये। वे घबरा गये, हुज़ूर (सल्ल०) से कहा, "अगर ये ज़रा झुककर देखेंगे तो हमको देख लेंगे।" आपने तसल्ली दी और फ़रमाया, "घबराओ नहीं, हमारे तुम्हारे साथ अल्लाह है।" और फिर अल्लाह ने आपको बचा लिया। आप मक्के से मदीने चले गये और दुश्मन आपको न पा सके।

इस तरह की बहुत सी बातें आपकी ज़िन्दगी में मिलती हैं। एक बार आप एक पेड़ के नीचे सो रहे थे। एक दुश्मन आया, उसने आपको सोता देखा तो झट तलवार खींच ली कि आपको क़त्ल कर दे, इतने में आपकी आंख खुल गई। दुश्मन ने आप से पूछा, "बताओ अब तुमको मुझ से कौन बचा सकता है?" आपने जवाब दिया, "अल्लाह।" आपका यह जवाब सुनकर दुश्मन इतना ज़्यादा रौब में आ गया कि तलवार छूटकर उसके हाथ से गिर पड़ी। अब हुज़ूर सल्ल० ने तलवार उठाली और फ़रमाया, "बताओ, अब तुमको मेरे हाथ से कौन बचा सकता है?" वह दुश्मन आपकी ख़ुशामद करने लगा। आपने उसे माफ़ कर दिया और कहा, "तुझे भी कहना चाहिये था कि अल्लाह बचा सकता है।" इस तरह जब कोई बुरा वक़्त आता, आप सल्ल० अल्लाह पर भरोसा रखते और अल्लाह आपकी मदद करता।

ख़ातिरदारी

प्यारे नबी सल्ल० अपने साथियों के आराम और सुख का भी बड़ा ख़याल रखते थे और दूसरे लोगों के आराम और सुख का भी बड़ा ख़याल रखते थे। प्यारे नबी सल्ल० के घर के बाहर कोई आदमी आता, चाहे वह मुसलमान होता या न होता, आप उसके आराम का भी बड़ा ख़याल फ़रमाते। लोग आप से मिलने के लिये, आप से दीन की बातें सीखने के लिये, आप से कुछ पूछने के लिये, आप से कुछ कहने के लिये, आपको देखने के लिये और बहुत से कामों के लिये आपके पास आते ही रहते थे। एक-एक, दो-दो और ज़्यादा-ज़्यादा भी। आप सबकी बड़ी ख़ातिर करते। उन्हें अच्छी जगह ठहराते, उन्हें अच्छा खाना खिलाते, आराम से सुलाते और रातों को उठ-उठकर देखते कि मेहमानों को कोई तकलीफ़ तो नहीं। ऐसा भी होता कि हुज़ूर सल्ल० के घर में खाने को कुछ न होता और मेहमान आ जाते, इस पर भी आप बड़ी ख़ुशी से मेहमानों के खाने-पीने का इन्तिज़ाम फ़रमाते।

एक बार एक यहूदी आप के यहां आया और आपके पास ठहरा। उस दिन आप के घर में खाने को कुछ न था। आपने एक बकरी का दूध पिलाया, वह पी गया, लेकिन भूखा ही रहा। आपने एक बकरी का दूध और पिलाया, वह फिर पी गया, लेकिन रहा भूखा ही। आप सल्ल० ने उसे एक और बकरी का दूध पिलाया, वह उसे भी पी गया, लेकिन रहा भूखा। इसी तरह एक-एक करके आपने उसे सात बकरियों का दूध पिलाया।

एक बार, एक आदमी आप सल्ल० के घर आया, रात को ठहरा। खा-पीकर सोया तो रात को उसे दस्त आ गया। हुज़ूर सल्ल० ने उसे बिस्तर दिया था, उसने उस बिस्तर को गन्दा कर दिया और सुबह होने से पहले ही घर से भाग गया। आपने सुबह को अपने हाथ से बिस्तर

धोया। वह आदमी भागते वक़्त अपनी तलवार वहीं भूल गया था। डरते-डरते तलवार के लालच में आया। देखा तो हुज़ूर (सल्ल०) को गंदगी धोते पाया। आपने उसे शर्मिंदा नहीं किया। उसकी तलवार उसे दे दी और उसे तसल्ली दी। वह आदमी आपके इस सुलूक से मुसलमान हो गया।

प्यारे रसूल सल्ल० के प्यारे साथियों में कुछ ऐसे थे जो दीन की बातें सीखने के लालच में हर वक़्त आपके आस-पास जमा रहते थे। उन्हें दीन की बातें सीखने का इतना शौक़ था कि वे कमाने के लिये भी नहीं जाते थे। मस्जिद नबवी के क़रीब एक चबूतरा था, वे सब उसी चबूतरे पर उठते-बैठते और सोते और हर वक़्त प्यारे नबी की बताई हुई बातों को याद करने में लगे रहते थे। उन सब के खाने-पीने की ज़िम्मेदारी हुज़ूर ने अपने ज़िम्मे ले ली थी। ये सब 'असहाबे सुफ़्फ़ा' (यानी चबूतरे वाले) कहलाते थे।

एक दिन असहाबे सुफ़्फ़ा ज़्यादा भूखे थे। प्यारे रसूल सल्ल० उनकी हालत देखकर बेचैन हो गये। अपनी प्यारी बीवी हज़रत आइशा रज़ि० के घर गये और फ़रमाया, "खाने को जो कुछ हो लाओ।" उम्मुलमोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० ने चूनी का पका हुआ खाना लाकर रख दिया, फिर कुछ छुआरे लायीं। इसके बाद दूध से भरा हुआ बड़ा प्याला दिया। आप यह सब असहाबे सुफ़्फ़ा के लिये ले गये।

एक बार आप के कुछ मेहमान आये। आपने एक बीवी के घर कहला भेजा कि मेहमानों के लिये खाना भेजें। उस बीवी के घर ख़ुद कुछ खाने को न था। आपने दूसरी बीवी के घर कहला भेजा। वहां भी अल्लाह के नाम के सिवा कुछ न था। इस तरह आपने अपनी सब बीवियों के घर कहला भेजा। मगर वे बेचारी सब भूखी अल्लाह-अल्लाह कर रही थीं और किसी के घर में दाना तक न था। अब आपने प्यारे साथियों (सहाबा रज़ि०) से कहा, "इन मेहमानों को

कौन खाना खिलायेगा ?'' एक सहाबी उठे बोले, ''मैं'' और वे मेहमानों को अपने घर ले आये।

ऐसा तो बहुत बार हुआ कि हुज़ूर के घरों में खाना तैयार किया गया। इतने में मेहमान आ गये तो आपने मेहमानों को खाना खिला दिया और घर के सब लोग भूखे ही सो रहे। कैसे ख़ातिरदार थे, प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

बराबरी का बर्ताव

प्यारे नबी सल्ल० किसी इन्सान को छोटा और नीच नहीं समझते थे। अमीर हो या ग़रीब, बच्चा हो या बूढ़ा, कोई ग़ुलाम हो या लौंडी, बड़े ख़ानदान वाला हो या छोटे ख़ानदान का, काला हो या गोरा, आप सबको बराबर का इन्सान समझते थे और सबकी इज़्ज़त करते थे।

एक दिन आप सहाबा के साथ बैठे थे। इतने में कहीं से दूध आ गया। आपका तरीक़ा था कि आप हर चीज़ सीधे हाथ की तरफ़ से बांटते थे। आपने ज़रा सा दूध पिया फिर सीधी तरफ़ देखा। आप के सीधी तरफ़ उस दिन हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास बैठे थे, जो अभी बच्चे थे। आपने बायीं तरफ़ देखा, तो बड़ी उम्र के सहाबा बैठे दिखाई दिये, आपने अब्दुल्लाह बिन अब्बास से कहा, 'मियां हक़ तो तुम्हारा ही है, लेकिन अगर तुम इजाज़त दो तो मैं पहले इन बड़ी उम्र के सहाबा को दूध दूं।' हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास थे तो कम उम्र के, लेकिन अल्लाह ने उनको सूझ-बूझ बहुत ज़्यादा दी थी। उन्होंने दिल में सोचा कि प्याले में जिस जगह प्यारे रसूल सल्ल० के होंठ छू गये हैं। उस जगह सबसे पहले अपने होंट लगाना बड़ी बरकत की बात है। यह सोचकर बोले, 'मैं यह बरकत हाथ से न जाने दूंगा', यह सुना तो हुज़ूर सल्ल० ने दूध का प्याला उन्हीं को दे दिया। उन्होंने दो एक घूंट दूध उसी जगह मुंह लगाकर पिया, जहां से हुज़ूर ने पिया था। इसके बाद

दूसरों को दे दिया।

इसी तरह एक बार आपकी दाहिनी तरफ़ एक बद्दू बैठा हुआ था। आपने हज़रत अनस रज़ि० से पीने का पानी मांगा, हज़रत अनस रज़ि० ने दूध पेश किया। आपने थोड़ा सा दूध पिया और हज़रत अनस रज़ि० को देकर फ़रमाया कि 'अब दाहिनी तरफ़ वाले का हक़ है।' इस तरह हुज़ूर के बाद बदद् ने पिया।

प्यारे रसूल सल्ल० के प्यारे साथी जब मिल-जुलकर कोई काम करते, तो हुज़ूर सल्ल० भी उनमें शामिल हो जाते। मस्जिद नबवी बनने लगी तो आपने सबके साथ काम किया। सहाबा रोकते कि हमारी जान आप पर कुर्बान हो, आप तकलीफ़ न फ़रमायें, लेकिन हुज़ूर न मानते। आपने इस मौक़े पर सबसे ज़्यादा मेहनत से काम किया। बड़े-बड़े वज़नदार पत्थर आपने लाकर ढेर कर दिये। इसी तरह एक बार एक ख़ंदक़ खोदने में सबसे ज़्यादा मुश्किल काम आपने किया।

एक बार हुज़ूर सल्ल० कहीं ज़ा रहे थे, सहाबा रज़ि० साथ थे। सब एक जगह ठहरे। खाना पकाने का सामान रखा गया, सबने एक-एक काम बांट लिया। हुज़ूर ने जंगल से लकड़ियां लाने का काम अपने ज़िम्मे लिया। सहाबा ने मना किया कि हम हाज़िर हैं, मगर हुज़ूर न माने और फ़रमाया, "मुझे यह पसन्द नहीं कि मैं तुम्हारे बीच नवाब बन कर बैठूं। ख़ुदा उस बन्दे को पसन्द नहीं करता जो अपने साथियों से अगल-थलग लगता हो।"

एक बार दुश्मनों से लड़ाई हुई। उस लड़ाई के वक़्त मुसलमानों के पास सामान कम था और ऊंट भी कम थे। मुसलमान चले तो सवारी के लिये एक-एक ऊंट, तीन-तीन मुसलमानों के हिस्से में आया। सब बारी-बारी से चढ़ते-उतरते चलते, हुज़ूर ने भी ऐसा ही किया। सहाबा ने बहुत कहा कि हुज़ूर सवार होकर चलें। मगर आपने किसी की बारी नहीं ली। कितने अच्छे थे, हमारे प्यारे नबी सल्ल०।

शर्म व हया

प्यारे नबी सल्ल० बड़े ही शर्मीले थे। शर्म के मारे कोई हलकी सी बात भी बेहयाई की ज़ुबान से न निकालते। रास्ते, गली और बाज़ारों में चुप-चाप चलते। बदन का जो हिस्सा कपड़ों से छिपाने के लायक़ होता उस का बड़ा ख़याल रखते। ठट्ठा लगाकर नहीं हंसते थे। ज़रूरत से फ़ारिग़ होने के लिये इतनी दूर निकल जाते कि कोई देख नहीं सकता था। कभी-कभी तीन-तीन मील दूर चले जाते। उस वक़्त अरब में घरों के अन्दर पाख़ाने बनाने का रिवाज न था।

हुज़ूर सल्ल० के बचपन की वह बात सब जानते हैं कि जब काबे की मरम्मत होने लगी तो आप भी बच्चों के साथ पत्थर ढोते थे। पत्थर ढोने में आपके कंधे छिल गये। आप के चचा अब्बास ने देखा तो आप का तहमद खोलकर आपके कंधे पर रख दिया। अब जो आपने अपने को नंगा देखा तो शर्म के मारे बेहोश होकर गिर पड़े। उस ज़माने में बच्चे तो बच्चे, बड़ों में इतनी शर्म नहीं थी। बहुत से लोग तो नंगे होकर काबे का तवाफ़ करते थे। कोई न समझ सका कि मुहम्मद सल्ल० क्यों बेहोश हो गये। सब आपको होश में लाने की तदबीर करने लगे। आपको ज़रा-ज़रा होश आया तो आपकी ज़ुबान से निकला, "मेरा तहबंद, मेरा तहबंद।" अब सब लोग समझे, आपको तहबन्द बांधा गया तो आपने आंखे खोलीं। उठे और फिर काम करने लगे। कैसे शर्मीले थे प्यारे नबी सल्ल०।

घमण्ड न था

अल्लाह ने आपको अपना आख़िरी रसूल बनाया। सबसे ज़्यादा आपको इज़्ज़त दी। अल्लाह ने आपको सारे अरब की हुकूमत अता फ़रमाई, लेकिन आप में ग़ुरूर और घमण्ड ज़रा भी न था। आप

घर का काम-काज ख़ुद ही कर लेते थे। बाज़ार से सौदा ख़ुद ले आते, दूसरों का भी सौदा ला देते। दूध ख़ुद दोह लेते। टूटी जूतियों को ख़ुद ही गांठ लेते। ग़रीबों और ग़ुलामों के साथ बैठकर खाना खा लेते।

एक दिन आप घर से निकले। लोग आपको देखकर अदब से खड़े हो गये। आपने मना फ़रमाया और साथ ही यह फ़रमाया, "जो आदमी यह पसन्द करे कि लोग उसकी इज़्ज़त के लिये खड़े हों, वह अपना ठिकाना जहन्नम में ढूंढ़े।"

एक बार कुछ लोग मिलने आये। उन्होंने कहा, "आप तो हमारे मालिक हैं।" आप सल्ल० ने फ़रमाया, "मालिक तो बस अल्लाह है।"

एक बार एक पागल औरत आई और कहा, "ऐ मुहम्मद मुझे तुम से कुछ काम है।" आप उठ खड़े हुये। वह आपको एक गली में ले गई और ज़मीन पर बैठ गई। आप भी ज़मीन पर बैठ गये। उसने जो कुछ कहा आपने उसे इत्मीनान दिलाया। फिर जब वह उठकर चली गई तब आप उठे।

हुज़ूर सल्ल० ने मक्का फ़तह किया और जब शहर में दाख़िल हुये तो आप एक ख़च्चर पर सवार थे, जिसकी लगाम की जगह खुजूर की छाल बंधी थी और आप सल्ल० अल्लाह का शुक्र अदा कर रहे थे।

एक बार आप अपने एक साथी के घर गये। आपको देखकर बच्चियां आ गईं। उनमें से किसी ने एक शेअर पढ़ा, जिसका मतलब यह था, "हम में एक ऐसा रसूल है जो कल की बातें जानता है।" आपने यह शेअर सुना तो उसे पढ़ने से रोक दिया, क्योंकि "कल की बातें अल्लाह के सिवा जानने वाला कोई नहीं है।"

हुज़ूर सल्ल० के प्यारे बेटे क़ासिम जिस दिन अल्लाह को प्यारे हुये उस दिन सूरज ग्रहण था। किसी ने कुछ इस तरह की बात कही कि नबी के बेटे के ग़म में सूरज को ग्रहण लग गया। आपने सुना तो फ़रमाया,

"ग़लत है। सूरज और चांद में ग्रहण लगना ख़ुदा के हुक्म से होता है, किसी की मौत और ज़िन्दगी से नहीं।"

एक बार हुज़ूर सल्ल० वुज़ू फ़रमा रहे थे। कुछ सहाबा ने आपके वुज़ू किये हुये पानी को हाथों में ले लिया और अपने चहरे पर मलने लगे। आपने पूछा "तुम यह क्यों कर रहे रहो ?" उन्होंने बताया कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल की मुहब्बत में ऐसा कर रहे हैं।

आपने यह सुन कर फ़रमाया, "जो अल्लाह के रसूल से मुहब्बत करना चाहे उसे चाहिये कि सच बोले, अमानतदार बने, और पड़ौसी के साथ अच्छा बर्ताव करे।"

एक बार किसी ने बात करते-करते कहा कि जो ख़ुदा चाहे और जो आप चाहें। यह सुनकर आपने फ़रमाया, "तुमने मुझको ख़ुदा के बराबर उसका साझी बना दिया। कहो, जो ख़ुदा चाहे।"

कैसी अच्छी बातें बताते थे आप। आप में ज़रा भी तो घमण्ड न था।

बहादुरी

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० से ज़्यादा बहादुर कोई न था। एक बार मदीने में शोर सुनाई दिया कि दुश्मन आ गये, इन दिनों एक दुश्मन (ग़स्सानी) के चढ़ाई कर देने की बड़ी चर्चा थी और यह खटका दिन-रात लगा रहता था। शोर सुनकर हम मुक़ाबले की तैयारी करने लगे। कोई अपने घोड़े की तरफ़ लपका, कोई अपने हथियार संभालने लगा। लेकिन सबसे पहले हुज़ूर सल्ल० अपने घर से निकले। जल्दी में घोड़े पर ज़ीन भी न कसी, आप मदीने के आस-पास हो आये, फिर आकर फ़रमाया, "घबराओ नहीं, कोई डर नहीं है।"

सहाबा रज़ि० में एक से एक बहादुर सहाबी थे, लेकिन तमाम सहाबा कहा करते थे कि जब हम दुशमनों से लड़ते और उनका दबाव हम

पर ज़्यादा होता तो हम सब प्यारे नबी सल्ल० की पनाह लेते थे।

बद्र और उहद की लड़ाइयां बहुत मशहूर हैं। दोनों लड़ाइयों में बड़े घमासान का रन पड़ा था, लेकिन दुशमनों से ज़्यादा क़रीब आप ही थे। उहद में आप बहुत ज़्यादा जख़्मी हो गये थे, लेकिन मुक़ाबले से न हटे।

हुनैन की लड़ाई में दुशमनों ने मुसलमानों पर ऐसे तीर बरसाये कि मुसलमानों के पैर उखड़ गये और वे तितर-बितर हो गये, लेकिन हुज़ूर अपने ख़च्चर को ऐड़ लगा-लगाकर आगे बढ़ा रहे थे। प्यारे सहाबा लगाम पकड़-पकड़कर रोकते और कहते कि हुज़ूर! दुशमन तो आप ही की ताक में हैं। फिर भी हुज़र आगे बढ़ते गये।

हज़रत बरा रज़ि० एक बहादुर सहाबी थे। उनसे किसी ने पूछा, "क्या तुम लोग हुनैन की लड़ाई में भाग खड़े हुये थे?" उन्होंने कहा, "हां, यह सच है, लेकिन मैं गवाही देता हूं कि नबी सल्ल० न घबराये, न पीछे हटे। ख़ुदा की क़सम जब घमासान का रन पड़ता तो हम सब हुज़ूर सल्ल० के ही पास आकर पनाह लेते थे। लड़ाइयों में सबसे ज़्यादा बहादुर वही समझा जाता था जो आपके पास खड़ा रहता था।"

हवाज़न के मुक़ाबले में मुसलमानों के क़दम उखड़े और हुज़ूर सल्ल० अकेले रह गये तो आपने नारा लगाया, "मैं सच्चा नबी हूं और अब्दुल मुत्तलिब की औलाद हूं।" फिर हज़रत अब्बास रज़ि० से कहा, "नेज़े वालों को पुकारो।" हज़रत अब्बास रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के घोड़े की लगाम थामे हुये साथ-साथ दौड़ रहे थे। उनकी आवाज़ बहुत ऊंची थी। उन्होंने मुसलमानों को पुकारा। मुसलमान पलट पड़े और उन्होंने लड़ाई जीत ली।

उबई बिन ख़लफ़ आप सल्ल० का जानी दुशमन था। वह बड़ा बहादुर और फ़ुर्तीला सिपाही था। वह हज़ारों बहादुरों के बराबर समझा जाता था। उहद की लड़ाई में वह अपने मज़बूत घोड़े पर सवार होकर आया, वह हुज़ूर सल्ल० की ताक में था। एक बार वह घोड़ा उड़ाता चला,

जो सामने आया उसे हटा दिया। सीधा आप पर हमला करने बढ़ा। मुसलमानों ने यह देखा तो घबरा गये। सब आगे बढ़े कि उसे रोकें। आपने फ़रमाया, "आने दो।" सहाबा अलग हट गये। आप नेज़ा लेकर बढ़े। उसके पास पहुंचे और धीरे से नेज़े की नोक उसकी गर्दन में चुभो दी। बस इतने में वह चीख़ मारकर भागा। उसे चीख़ते-चिल्लाते देखा तो उसके साथियों ने कहा, "अरे तू ऐसा बहादुर और इतनी सी चोट खाकर बुरी तरह चिंघाड़ रहा है।" उसने जवाब दिया, "हां तुम सच कहते हो, लेकिन यह मुहम्मद के हाथ की चोट है।"

ऐसे बहादुर थे हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

आप सच्चे थे

प्यारे रसूल सल्ल० बड़े सच्चे थे। आपने कभी कोई झूठ बात ज़ुबान से नहीं निकाली। आप अभी नबी नहीं हुये थे कि अरब वालों ने आपको सादिक़ (सच्चा) कह कर पुकारा। यह अरब में सबसे बड़ा ख़िताब था। जब आप नबी हुये और इस्लाम फैलाना शुरू किया, तो बहुत से लोग आप के दुशमन हो गये। दुशमनों का क़ायदा है कि ताक में रहते हैं। ज़रा-सी बात पा जायें तो मशहूर कर दें कि फ़लां ऐसा है, वैसा है। कोई बात न मिले तो अपनी तरफ़ से झूठ गढ़कर कह दें, लेकिन नबी सल्ल० को कट्टर से कट्टर दुशमन ने भी कभी झूठा नहीं कहा। वे आपको तरह-तरह से कोसते थे, तौबा-तौबा मजनूं और शायर तक कहते, जान लेने पर तुले रहते, लेकिन किसी ने यह नहीं कहा कि मुहम्मद सल्ल० झूठे हैं।

आपका सबसे बड़ दुशमन अबू जहल था। वह कहा करता था कि ऐ मुहम्मद ! मैं तुम को झूठा नहीं कहता, हां तुम जो यह कहते हो इसको मैं ठीक नहीं समझता। (उसका मतलब इस्लाम के बुनियादी अक़ीदों से था, जो क़ुरआन पेश कर रहा था।) बद्र की लड़ाई में जब मुसलमानों

का मुक़ाबला मक्के के काफ़िरों से हुआ तो क़ुरैशी लश्कर में से एक सरदार (अबुल बख़तरी) ने हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ इशारा करके अबू जहल से पूछा, "सच बता ! यह आदमी कैसा है?" अबू जहल ने जवाब दिया! "यह बड़ा ही सच्चा है।" यह जवाब सुनकर अबुल बख़तरी ने कहा, "तो फिर मुसलमान क्यों नहीं हो जाता और मुसलमानों से क्यों लड़ता है?" जवाब दिया, "यह नहीं हो सकता कि मैं बिलाल जैसे ग़ुलामों के साथ बैठूं।" (हज़रत बिलाल रज़ि० ग़ुलाम थे और उस ज़माने में ग़ुलामों को बड़ा ही नीच और ज़लील समझा जाता था।)

अबू जहल के बाद अबू सुफ़ियान का नम्बर था। यह एक बार रोम के बादशाह हिरक़ल के दरबार में गये। उसने इनसे पूछा, "तुम्हारे यहां जो आदमी अपने को नबी कहता है, क्या वह कभी झूठ भी बोला है?" अबू सुफ़ियान ने जवाब दिया, "नहीं, मुहम्मद झूठे नहीं हैं।" यह सुना तो बादशाह ने कहा, "मुझे यक़ीन है कि अगर वह आदमी (यानी मुहम्मद सल्ल०) ख़ुदा पर झूठ बोलता तो वह, आदमियों से झूठ बोलने में न चूकता।"

सच-मुच बड़े सच्चे थे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

अमानतदारी

प्यारे रसूल सल्ल० बड़े ही अमानतदार थे। जो लोग आपको रुपया पैसा या सामान रखने के लिये देते, तो आप उस सामान या रुपये को बड़ी ही हिफ़ाज़त के साथ रखते। उसे अपने काम में न लाते और न उसमें कमी करते। लोग बाहर जाते तो अपनी चीज़ें आपके हवाले कर जाते और जब आते वैसी की वैसी ले लेते।

हुज़ूर सल्ल० की अमानतदारी इतनी मशहूर हो गई कि नबी होने से पहले ही लोग आपको "अमीन" कहने लगे थे। यानी बहुत बड़ा अमानतदार। जो लोग आपकी जान के दुशमन थे, वह भी आपको

बड़ा ही अमानतदार समझते थे। जब आप मक्का से मदीने हिजरत फ़रमाने लगे तो बहुत से काफ़िरों की अमानतें आप के पास थीं। चलते वक़्त वे सब हज़रत अली रज़ि० को दे दीं और बता दिया कि किस-किस की अमानत हैं, ताकि वे उनको दे दें।

प्यारे नबी सल्ल० ने एक हदीस में फ़रमाया कि जो आदमी यह चाहता है कि अल्लाह और रसूल उससे मुहब्बत करें, उसे चाहिये कि जब बात करे तो सच बोले और उसके पास अमानत रखी जाये तो उसकी देख-भाल रखे और वापस कर दे।

प्यारे नबी सल्ल० ने यह भी फ़रमाया कि अमानत में गड़बड़ करने वाला मुनाफ़िक़ होता है यानी ज़ुबान से चाहे वह अपने को मुसलमान कहे, लेकिन उसका दिल इस्लाम से हटा हुआ होता है।

वादे के सच्चे

प्यारे नबी सल्ल० किसी से वादा करते तो उसे ज़रूर पूरा करते। जब आप नबी नहीं हुये थे, उस वक़्त की बात है। एक साहब थे। उनका नाम अब्दुल्लाह था। वे आपको एक जगह मिले। लेन-देन की कोई बात हुई। उन्होंने कहा, "अच्छा इसी जगह ठहरिये, मैं अभी आकर हिसाब करता हूं।" यह कहकर वे चले गये, लेकिन बात उनके ध्यान से उतर गई। तीसरे दिन इसी तरफ़ फिर निकले तो देखा कि आप सल्ल० वहीं बैठे हैं। अब्दुल्लाह बहुत शर्मिंदा हुए।

प्यारे नबी सल्ल० वादे के इतने सच्चे थे कि आप के दुशमन भी मानते थे। एक बार खम के बादशाह ने अबू सुफ़ियान से पूछा कि तुम्हारे यहां जो साहब अपने को नबी कहते हैं, वह वादे के सच्चे भी हैं?" अबू सुफ़ियान उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० के जानी दुशमन थे, लेकिन उन्होंने बादशाह के सामने इक़रार किया कि मुहम्मद (सल्ल०) वादे के सच्चे हैं।

बदर के मैदान में हुज़ूर सल्ल० और मक्के के काफ़िरों में घमासान की लड़ाई हुई। आपकी तरफ़ तीन सौ तेरह मुसलमान थे और दुशमनों की तरफ़ बारह सौ। उसी ज़माने में कुछ मुसलमान मक्के से आ रहे थे। मक्के के काफ़िरों ने उनको रोका और कहा कि तुम मुहम्मद (सल्ल०) के पास जा रहे हो। उन्होंने इनकार किया। काफ़िरों ने इस वादे पर उन्हें छोड़ा कि लड़ाई में मुहम्मद का साथ नहीं देंगे। उन्होंने मान लिया, फिर हुज़ूर सल्ल० के पास आये, सारा हाल कहा। आपने फ़रमाया, "वादा किया है तो तुम जाओ हमें सिर्फ़ ख़ुदा की मदद चाहिये।"

जब आपने मक्का फ़तह किया, तो बहुत से लोग मुसलमान हो गये। बहुत से लोग भाग गये। मुसलमान होने वालों ने अपने घर वालों की माफ़ी के लिये कहा, हुज़ूर सल्ल० ने वादा कर लिया। फिर जब भागने वाले वापस आये तो आपने उन्हें सच-मुच माफ़ फ़रमा दिया। उनमें आप के बड़े-बड़े दुशमन थे। सफ़वान बिन उमय्या, इकरिमा बिन अबी जहल और ऐसे ही दूसरे लोग आपकी इस माफ़ी से मुसलमान हो गये। अल्लाह इन सबसे राज़ी हो।

बुराई के बदले भलाई

प्यारे रसूल सल्ल० के साथ कोई बुराई करता तो आप उसे माफ़ कर देते और माफ़ ही नहीं, बल्कि बुराई का बदला भलाई से देते। आपका यह तरीक़ा ज़िन्दगी भर रहा। आये दिन आप अपने दुशमनों को माफ़ कर देते।

हुज़ूर सल्ल० जब मक्का में थे तो एक बार ताइफ़ गये। आपने वहां के लोगों से कहा, "अल्लाह को एक मानो, मुहम्मद को अल्लाह का रसूल जानो। आख़िरत की पकड़ से डरो। बुतों की पूजा से परहेज़ करो। बुराइयां छोड़ दो और अल्लाह से रिश्ता जोड़ लो।" यह सुनकर ताइफ़ वाले बिगड़ गये। आपको बहुत पीटा, आपको लहूलहान कर दिया।

आप चोटें खाकर गिर पड़े। आपके ख़ादिम ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० आपको उठाकर एक बाग़ में ले गये। उन्होंने आप से कहा, "हुज़ूर आप ताइफ़ वालों को बद्दुआ क्यों नहीं देते? आपने हाथ उठाये और बद्दुआ के बदले ताइफ़ वालों के लिये अल्लाह से दुआ की कि "ऐ अल्लाह! इन्हें माफ़ कर दे। यह कुछ जानते नहीं, आख़िरत को मानते नहीं, ऐ अल्लाह इन्हें बख़्श दे।"

इस दुआ का यह असर हुआ कि आगे चलकर ताइफ़ वाले मुसलमान हो गये। और उनमें बड़े-बड़े बहादुर लोग पैदा हुये और फिर इन लोगों ने इस्लाम को ख़ूब फैलाया।

ज़ैद बिन साना एक यहूदी था। एक बार हुज़ूर सल्ल० ने उससे क़र्ज़ लिया और कुछ दिनों के लिये वादा किया। वह वादे से पहले ही अपना क़र्ज़ मांगने आ गया। उसने आकर हुज़ूर सल्ल० की चादर खींची और हुज़ूर को बुरा-भला कहने लगा कि तुम टाल-मटोल करके मेरी रक़म मार लोगे। इसी बात पर हज़रत उमर रज़ि० को ग़ुस्सा आ गया। बोले "ओ अल्लाह के दुशमन! तू अल्लाह के रसूल के बारे में ऐसी बुरी बात कहता है। प्यारे नबी सल्ल० मुसकराये और हज़रत उमर रज़ि० से फ़रमाया, "ऐ उमर! तुम को चाहिये था कि मुझ से कहते, क़र्ज़ा अदा कर दो और उससे कहते कि भाई, नर्मी करो!" इसके बाद फ़रमाया कि इस यहूदी का क़र्ज़ अदा कर दो और इसे बीस साअ (साअ एक वज़न होता है) खजूरें दे दो।

एक बार एक बद्दू आया। वह मस्जिद में आकर खड़े-खड़े पेशाब करने लगा। लोग दौड़े कि उसे पीटें। आपने फ़रमाया, "जाने दो और पेशाब पर पानी बहा दो और देखो उसे कुछ दे दो। अल्लाह ने तुम्हें नर्मी के लिये भेजा है।"

एम बार एक बद्दू आया। उसने आते ही हुज़ूर सल्ल० की चादर इस ज़ोर से खींची कि प्यारे रसूल सल्ल० की गर्दन लाल हो गई। आपने उसकी तरफ़ देखा। उसने कहा, "मेरे ऊंटों को ग़ल्ले से लाद दे। तेरे

पास जो कुछ है वह न तेरा है न तेरे बाप का।" आपने फ़रमाया, "पहले मेरी गर्दन का बदला दो तब अनाज दूंगा।" वह बार-बार कहता रहा, ख़ुदा की क़सम बदला न दूंगा। आख़िर आपने हुक्म दिया कि उसके ऊंटों पर ज्वार और खजूरें लाद दो।

सब जानते हैं कि अबू जहल आपका कट्टर दुश्मन था। इसी तरह उसके बेटे इकरमा भी दुशमन थे। जब मक्का फ़तह हुआ तो इकरमा मक्का से भाग गये, उनकी बीवी जाकर उनको लाईं तो उन्हें देखते ही हुज़ूर सल्ल० ख़ुश हो गये, उठे, उनसे मिलने को बढ़े और उनको वापस आने की मुबारकबाद दी।

एक बार मक्के वालों ने आपका बायकाट कर दिया, न कुछ खाने को देते और न कुछ ज़रूरत की चीज़ें आपके पास जाने देते। हुज़ूर सल्ल० के साथ बच्चे, औरतें और बूढ़े भूख के मारे तड़पते। तीन साल तक इसी तरह बायकाट रहा। इसके बाद ऐसा हुआ कि यमामा के रईस, समामा मुसलमान हो गये। उन्होंने एक बार क़सम खायी कि प्यारे रसूल सल्ल० की इजाज़त के बग़ैर मक्के वालों को एक दाना भी न दिया जायेगा। मक्के में ग़ल्ला वहीं से आता था। अब तो मक्के में क़हत पड़ गया। मक्के वालों ने घबरा कर हुज़ूर से कहा, हुज़ूर सल्ल० को तरस आ गया और कहला भेजा कि समामा ग़ल्ला भेज दो।

मक्के के काफ़िर मुसलमानों को बहुत ही सताते थे। दोपहर के वक़्त तपती हुई रेत में लिटा देते। पानी में डुबकियां देते, मारते-पीटते और क़त्ल कर देते। हज़रत ख़बाब रज़ि० को तो जलते हुये अंगारों पर लिटा दिया, जिससे उनकी पीठ जल गई और चर्बी निकल गई। वे ग़ुस्से में आये और हुज़ूर से कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल! इनके लिये बद्दुआ कीजिये।"

यह सुनते ही हुज़ूर सल्ल० का चेहरा लाल हो गया और कुछ मुसलमानों ने भी बद्दुआ करने को कहा, आपने फ़रमाया, "मैं दुनिया के लिये रहमत बनाकर भेजा गया हूं। ज़हमत (परेशानी) बनाकर नहीं।"

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० की मां इस्लाम की दुश्मन थीं। वह रोज़ हुज़ूर को गालियां दिया करतीं। यह गालियां सुनकर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० को बहुत दुख होता। उन्होंने आकर हुज़ूर सल्ल० से कहा, "मेरी मां के लिये दुआ कीजिये।" आपने उनके लिये मुसलमान होने की दुआ की, तो अबू हुरैरह रज़ि० ख़ुश हो गये, दौड़े-दौड़े घर गये, वहां देखा तो मां नहा रही थी। नहाने के बाद अपने आप मुसलमान हो गईं। उन्होंने कलमा शहादत पढ़ लिया।

अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अशहदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू।

यानी मैं गवाही देती हूं कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देती हूं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) उसके बन्दे और रसूल हैं।

बच्चों से प्यार

प्यारे रसूल सल्ल० बच्चों से बहुत मुहब्बत करते थे। आप कहीं जा रहे होते, रास्ते में बच्चे मिलते तो आप उन्हें सलाम करते। आप अपने साथ सवारी पर किसी को आगे और किसी को पीछे बिठा लेते। उनसे अच्छी-अच्छी बातें करते। खजूरें या उनके देने के लायक़ कोई दूसरी चीज़ होती तो उन्हें बांटते। उन्हें प्यार करते। एक बार एक बद्दू ने देखा तो बोला, "आप बच्चों को प्यार करते हैं? मेरे दस बच्चे हैं, मैंने कभी किसी को प्यार नहीं किया।" आपने फ़रमाया, "अगर अल्लाह तुम्हारे दिल से मुहब्बत छीन ले तो मैं क्या करूं।"

एक दिन आपके पास एक सहाबी हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ि० आये। उनके साथ उनकी बच्ची भी थी। उसका नाम उम्मे ख़ालिद था। बच्ची आकर हुज़ूर के कंधों से खेलने लगी। हज़रत ख़ालिद ने डांटा, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने डांटने से मना फ़रमाया।

हुज़ूर सल्ल० के एक ग़ुलाम थे, ज़ैद रज़ि०। आपने ज़ैद रज़ि० को पाला था। ज़ैद रज़ि० के बेटे उसामा रज़ि० थे। उसामा रज़ि० से हुज़ूर सल्ल० को मुहब्बत थी। फ़रमाया करते कि उसामा अगर बेटी होती तो मैं उसे ज़ेवर पहनाता और अपने हाथों से उसकी नाक साफ़ करता।

एक बार ईद के दिन आप मुंह ढाककर लेटे हुये थे। कुछ बच्चियां घर में आईं और गाने-बजाने लगीं। इतने में हज़रत अबू बक्र रज़ि० आये। उन्होंने बच्चियों को डांटा। हुज़ूर सल्ल० ने सुना तो आपने मुंह पर से चादर हटाई और फ़रमाया, "गाने दो, आज इनकी ईद है।"

नर्म दिली

प्यारे नबी सल्ल० दिल के बड़े नर्म थे। दुख की बात होती तो आपका दिल भर आता और आंसू निकल आते।

एक बार एक सहाबी ने अपना पुराना क़िस्सा सुनाया (जब वे मुसलमान नहीं हुये थे) कि मेरी एक छोटी बच्ची थी। हमारे ख़ानदान में लड़कियों के मार डालने का तरीक़ा चला आ रहा था। मैंने भी अपनी लड़की को ज़िन्दा दफ़न कर दिया। वह अब्बा-अब्बा पुकार रही थी और मैं उस पर मिट्टी डाल रहा था।

प्यारे रसूल सल्ल० यह सुनकर रो पड़े। आपने उनसे कहा फिर सुनाओ, उन्होंने फिर सुनाया, तो आप फिर रोये। इतना रोये कि चेहरा आंसुओं से तर हो गया।

एक लड़ाई में कुछ क़ैदी हाथ आये। उनके हाथ-पांव जकड़कर बांध दिये गये, इससे उन्हें तकलीफ़ हुई। वे रात को कराहते जिसकी वजह से हुज़ूर को नींद नहीं आ रही थी। आप बार-बार करवटें बदल रहे थे। लोग समझ गये। उन्होंने क़ैदियों की गिरहें ढीली कर दीं। तब हुज़ूर सल्ल० को नींद आई।

एक बार हज़रत साद बिन उबादा रज़ि० बीमार हुये । आप उनको

देखने गये तो उनकी हालत देखकर आपका दिल भर आया और आप रोने लगे। आपको रोता देखकर लोग भी रो पड़े।

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० मक्के के एक रईस के बेटे थे। बड़े लाड-प्यार से पाले गये थे। जवान होने पर मुसलमान हो गये, तो मां-बाप दुशमन हो गये। मारा-पीटा, क़ैद कर दिया, घर से निकाल दिया। एक दिन हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के पास आये तो सबने देखा कि रेशम के कपड़ों के बदले वह एक कम्बल ओढ़े हुये थे, वह भी फटा हुआ था। यह देखकर हुज़ूर सल्ल० को बहुत दुख हुआ, और आप ने गर्दन झुका ली। एक बार एक सहाबी आये, वे चादर में चिड़िया के बच्चों को छिपाये हुये थे। आपने हुक्म दिया, "जाओ! इन्हें जहां से लाये हो वहीं रखकर आओ।"

एक बार आप सफ़र में थे। रास्ते में ठहरे तो एक आदमी ने एक चिड़िया के घोंसले से उसका अण्डा निकाल लिया। चिड़िया अण्डे की वजह से पर मारने लगी। हुज़ूर सल्ल० ने देखा तो फ़रमाया, "अण्डे वहीं रख दो।"

एक बार एक भूखे ऊंट को देखा तो फ़रमाया, "इन बे-ज़ुबानों के बारे में भी ख़ुदा से डरो।" जानवरों पर अगर कोई ज़्यादा बोझ लादता तो आप मना फ़रमा देते।

एक बार आपके घर में कुछ औरतें जमा थीं। ये सब औरतें आपकी रिश्तेदार थीं और बढ़-बढ़कर बातें कर रही थीं। इतने में हज़रत उमर रज़ि० आये तो सब उठकर चल दीं। हुज़ूर सल्ल० हंस पड़े। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, "अल्लाह आपको हमेशा हंसता रखें, लेकिन आप क्यों हंसे?" फ़रमाया, "मुझे इन औरतों पर हंसी आई कि तुम्हारी आवाज़ सुनते ही चल दीं।" अब हज़रत उमर रज़ि० ने उन औरतों से कहा, "तुम, मुझसे इतना डरती हो और हुज़ूर सल्ल० से नहीं डरतीं?" औरतों ने जवाब दिया, "प्यारे रसूल सल्ल० आप से ज़्यादा नर्मदिल हैं।"

माफ़ करने की आदत

अल्लाह का दीन फैलाने के सिलसिले में दुशमनों ने आपको गालियां दीं, आपकी हंसी उड़ाई। आपको बुरा-भला कहा। आपको मारा-पीटा भी। आपको हर तरह से सताया। आपका बाइकाट किया, क़त्ल करने की कोशिशें कीं, लेकिन जब अल्लाह ने आपको हुकूमत दी, तो आपने किसी से बदला नहीं लिया। ऐसी बहुत-सी बातों में से कुछ बातें सुनिये।

हज़रत हमज़ा रज़ि० आपके प्यारे चचा थे। बड़े बहादुर आदमी थे। इस्लाम के लिये दुशमनों से ख़ूब लड़े। उनके सामने हुज़ूर सल्ल० को कोई बुरा कहता तो लड़ पड़ते। दुशमनों के बड़े-बड़े सरदार उनके हाथों मारे गये। एक लड़ाई में वहशी पहलवान ने छिपकर हज़रत हमज़ा को शहीद कर दिया। हज़रत हमज़ा रज़ि० की मौत का हुज़ूर सल्ल० को ज़िन्दगी भर ग़म रहा। लेकिन जब इस्लामी हुकूमत क़ायम हो गई तो वहशी पहलवान हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में आया और माफ़ी मांगी। वहशी को देखकर हुज़ूर सल्ल० को चचा याद आ गये। आपने उससे सिर्फ़ यह कहा, "अच्छा जाओ, माफ़ कर दिया। लेकिन अब मेरे सामने न आना। तुमको देखकर चचा हमज़ा याद आ जाते हैं।" हुज़ूर सल्ल० का मतलब यह था कि ऐसा न हो कि तुमको देखकर चचा की मुहब्बत में बद्दुआ निकल जाये। अबू सुफ़ियान की बीवी हिन्दा ने हज़रत हमज़ा रज़ि० का सीना चीरकर ग़ुस्से में कलेजा चबा डाला और नाक-कान काटकर हार बना लिया, लेकिन जब हिन्दा ने आकर माफ़ी मांगी तो उसे भी प्यारे नबी सल्ल० ने माफ़ कर दिया।

हिबार बिन असवद हुज़ूर सल्ल० का कट्टर दुशमन था। हुज़ूर की प्यारी बेटी हज़रत ज़ैनब रज़ि० मक्के से मदीने को हिजरत करने लगीं, तो हिबार दौड़ा और उनको ऊंट पर से गिरा दिया। हज़रत ज़ैनब रज़ि० के इतनी चोट आई कि वे ज़िन्दा न रह सकीं, लेकिन जब उसने भी आकर माफ़ी मांगी तो प्यारे नबी सल्ल० ने उसे भी माफ़ कर दिया।

हुज़ूर सल्ल० हिजरत के लिए मक्के से निकले तो मक्के के दुशमनों

ने यह एलान किया कि जो मुहम्मद का सिर काटकर लायेगा, उसे लाल बालों वाले सौ ऊंट इनाम में दिये जायेंगे। लालची दुशमन दौड़ पड़े। एक दुशमन था "सुराक़ा" वह घोड़े पर सवार हुआ और हुज़ूर सल्ल० को तलाश करता हुआ आपके पास तक पहुंच गया। उसने चाहा कि आप पर वार करे, लेकिन उसका घोड़ा घुटनों तक रेत में धंस गया। वह घोड़े से उतरा और लगाम पकड़कर घोड़े को खींचा। घोड़े को रेत से निकाला फिर आपकी तरफ़ बढ़ा, लेकिन घोड़ा फिर रेत में धंस गया। तीन बार ऐसा ही हुआ। अब वह घबराया। उसने माफ़ी मांगी, आपने उसे भी माफ़ कर दिया।

बच्चों का ख़याल

प्यारे नबी सल्ल० नमाज़ पढ़ाते होते तो जमाअत में पीछे औरतें भी होतीं, औरतों के साथ बच्चे भी होते। अगर उस वक़्त कोई बच्चा रोने लगता तो हुज़ूर सल्ल० छोटी सूरत पढ़ते और नमाज़ जल्द ख़त्म कर देते, ताकि बच्चे को तकलीफ़ न हो।

एक बार दुशमनों से लड़ाई हो रही थी। उस लड़ाई में कुछ बच्चे झपेट में आकर मारे गये। हुज़ूर सल्ल० ने सुना तो आपको बड़ा दुख हुआ। किसी ने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल! वे तो दुशमनों के बच्चे थे।" आपने फ़रमाया, "दुशमनों के बच्चे तुम से अच्छे थे। ख़बरदार! उनको क़त्ल न करना, ख़बरदार! उनको क़त्ल न करना।"

फ़सल पर कोई फल या मेवा आपके पास आता तो जो सबसे कम उम्र का बच्चा होता आप सल्ल० उसे देते चाहे वे किसी मुसलमान का होता या किसी ग़ैर-मुस्लिम का।

जब आप हिजरत करके मदीना पहुंचे तो अन्सार की नन्ही-मुन्नी बच्चियां ख़ुशी में यह गीत गा रही थीं कि "मुहम्मद सल्ल० हमारे कितने अच्छे मेहमान हैं।" आपने यह गीत सुना तो उनसे कहा, "तुम मुझ से मुहब्बत करती हो? सब ने कहा, "हां।" आपने जवाब दिया, "मैं भी तुम से मुहब्बत करता हूं।"